23-25 मार्च, 2022 को 'प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा माननीय सांसदों के समक्ष प्रस्तुतियाँ' दिए जाने के अवसर पर प्राइड, नई दिल्ली द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दौरान माननीय अध्यक्ष का उद्घाटन भाषण

———

सबसे पहले, मैं आप सभी विशिष्टजनों को पद्म पुरस्कार प्राप्त करने के लिए बधाई देता हूँ। आप सभी ने अपने अपने कार्यों और सेवाओं के माध्यम से समाज की प्रगति में उल्लेखनीय योगदान दिया है। मैं, आज इस *कार्यक्रम* में अपने सभी साथी सांसदों की ओर से आप सभी का अभिनंदन करता हूँ।

'पद्म पुरस्कार प्राप्तकर्ता' होने के कारण, आप हम सभी के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। आपने अपने बल पर, अथक प्रयास करते हुए समुदाय और समाज के कल्याण के लिए अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है।

अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़संकल्प के साथ, आपने सभी बाधाओं और चुनौतियों का सामना करते हुए विभिन्न सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रों में जो असाधारण उपलब्धियाँ हासिल की हैं, उस पर पूरे देश को गर्व है, और इसका हम सभी को भविष्य में अनुकरण करना चाहिए।

हमारे देश के लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर हमारी संसद में जन प्रतिनिधि के रूप में, हम हमेशा अपने सामाजिक-राजनीतिक कार्यकलापों में आपकी उपलब्धियों से तथा आपके कार्यों से सीख ले सकते हैं।

माननीय सांसदगण भी जनता की बेहतरी के लिए कार्य करते हैं। वे जनता के दुःख दर्द, उनकी तकलीफों, समस्याओं और अभावों को संसद में अभिव्यक्ति देते हैं ताकि सरकार जनता के व्यापक हित में नीति बनाए तथा संसद द्वारा बनाए गए कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन करे। तभी समाज के अंतिम पायदान के व्यक्ति तक का कल्याण सुनिश्चित हो सकेगा। इस प्रकार के कार्यकमों से हमें अपने अनुभव साझा करने का मौका मिलता है जिसके माध्यम से हमें नई जानकारी प्राप्त होती है।

इसी उद्देश्य के साथ, लोक सभा सचिवालय की शोध एवं प्रशिक्षण संस्था प्राइड द्वारा दूसरी बार इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

मुझे विश्वास है कि विभिन्न क्षेत्रों में आपकी और आपके कार्यों के अनुभवों की प्रस्तुति सभी लोगों में दृढ़ संकल्प, इच्छा-शक्ति और प्रेरणा की भावना जागृत करेगी। मुझे विश्वास है कि हमारे जनप्रतिनिधियों को इस पहल से बहुत लाभ होगा।

साथियो, हमारी सभ्यता एवं संस्कृति बहुत प्राचीन है। इसका आधार समाज की सेवा और देश सेवा है। बचपन से ही हमें सेवा भाव एवं कर्त्तव्यबोध की शिक्षा दी जाती है।

हमारे संतों, ऋषि मुनियों और महापुरुषों ने हमेशा अपने उपदेशों और कार्यकलापों से हमें यही शिक्षा दी है कि हमें अपने काम को अपना परम कर्तव्य समझकर करना चाहिए।

वैदिक काल में, हमारे देश में '*सुश्रुत*', नाम के चिकित्सक हुए, जिन्हें भारतीय चिकित्सा का जनक कहा जाता है। इसके अलावा हमारे देश के महान गणितज्ञ '*आर्यभट्ट*' ने शून्य का आविष्कार किया था। वहीं महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सत्य और अहिंसा जैसे मूल्यों के आधार पर स्वतंत्र भारत की नींव रखी गई।

बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर के अथक प्रयासों से स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व और न्याय के आदर्शों पर आधारित संविधान की रचना हुई, जो कि आज भी देश की सामाजिक आर्थिक प्रगति के लिए हमारे प्रयासों में हमारा मार्गदर्शन करता है।

हमारे पास स्वामी विवेकानंद और श्री रवींद्रनाथ टैगोर जैसे मनीषियों के कार्यों एवे संदेशों की विरासत है। वहीं सर सी.वी. रमन जैसे महान वैज्ञानिकों के उपलब्धियों की धरोहर भी है।

इसी प्रकार यहां उपस्थित सभी पुरस्कार प्राप्तकर्ता भी हमारे लिए और हमारी युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। आपकी जीवन गाथा से हमें मार्गदर्शन मिलता है तथा हर प्रकार की परिस्थितियों और चुनौतियों से लड़ने की शक्ति मिलती है।

मित्रो, इस वर्ष 15 अगस्त को भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे हो जाएंगे। इस अवसर पर हम देश भर में 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रहे हैं, जो भारत के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति और यहां के लोगों की उपलब्धियों का महोत्सव है।

'आजादी का अमृत महोत्सव' भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक प्रगति को दर्शाने वाला कार्यक्रम है।

ऐसे महत्वपूर्ण अवसर पर, माननीय प्रधान मंत्री महोदय ने एक ऐसा नया और आत्मनिर्भर भारत बनाने का सपना देखा है जिसमें सर्वोत्तम भारतीय परंपराओं और अत्याधुनिक वैश्विक दृष्टिकोण का समन्वय हो।

आजादी के इस अमृत काल में हमने अगले **25** वर्षों के लिए देश की प्रगति और विकास की एक व्यापक रूपरेखा भी तैयार की है। 'सभी के कल्याण' के सिद्धांत पर ध्यान केंद्रित कर, डिजिटल इकोनोमी को बढ़ावा देकर, वित्तीय प्रौद्योगिकी समर्थित विकास को अपनाकर, स्वच्छ ऊर्जा और क्लाइमेट एक्शन के माध्यम से हमारे देश के लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना ही हमारा उद्देश्य है।

मित्रो, हमारे संविधान ने हमें पर्याप्त स्वतंत्रता और अधिकार प्रदान किए हैं। परंतु वर्तमान कालखंड में हमें अपने कर्त्तव्यों पर अधिक बल देना है।

मुझे लगता है कि यदि हम अपने मौलिक कर्तव्यों का पूरी ईमानदारी से पालन करें तो हमारे देश की अधिकांश समस्याओं का समाधान हो सकता है।

मित्रो, अपने देश को शीर्ष पर ले जाने के लिए हमें सामूहिकता से प्रयास करने की आवश्यकता है और ऐसे में मैं समझता हूँ कि हमारे सभी पद्म पुरस्कार प्राप्तकर्ता हम सभी के लिए, हमारे युवाओं के लिए, देश के लिए मार्गदर्शक की भूमिका में हैं।

आप सभी असीम ऊर्जा और प्रेरणा के स्रोत हैं। आपका जीवन अपने-आप में सफलताओं की गाथा है।

श्री श्याम सुंदर पालीवाल **2006** से ही प्रत्येक बालिका के जन्म पर **111** पौधे लगाते आ रहे हैं। उनके इस अनुकरणीय प्रयास का नतीजा है कि पिप्लांतरी गांव गंभीर सूखे और पानी के संकट से उबर पाया है। वे बालिकाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य पर भी ध्यान देकर उनके सशक्तिकरण की दिशा में अपना योगदान दे रहे हैं।

इसी तरह तमिलनाडु के श्री मराची सुब्बुरमन सामाजिक कार्यों से जुड़े हैं। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालय बनवाने और खुले में शौच की समस्या का समाधान करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। आय अर्जन के लिए कौशल प्रदान कर वह महिलाओं के सशक्तिकरण का कार्य भी कर रहे हैं।

प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता और मराठी लेखक श्री गिरीश प्रभुणे का खानाबदोश जनजातियों तथा समुदायों, विशेष रूप से पारदी जनजाति में बहुत सम्मान है। इनके प्रतिष्ठान ने जनजातियों के लिए डेरे बनाने, घुमंतु जनजातियों के लिए पड़ाव डालने हेतु चुनिंदा इलाकों में खुले स्थानों की पहचान करने, मुकदमों में कानूनी सहायता प्रदान करने, उनके बच्चों की शिक्षा जारी रखने के लिए स्कूल सुविधा प्रदान करने, तथा आर्थिक सहायता के लिए कार्य किए।

साथियो, अंधविश्वास के कारण, बहुत से क्षेत्रों में विचहंटिंग के मामले देखने को मिलते हैं। सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती बीरूबाला राभा असम में विचहंटिंग के खिलाफ निरंतर कार्य करती रही हैं। इन्होंने और इनकी टीम ने विचहंटिंग के शिकार सौ से अधिक लोगों का पुनर्स्थापन किया है। असम में विच हंटिंग पर कानून लाने में श्रीमती राभा एवं उनके नाम पर स्थापित संगठन की मुख्य भूमिका रही है।

मित्रो, हम अपने देश में परित्यक्त बच्चियों और उनकी दुर्दशा के बारे में रिपोर्टें सुनते हैं। सुश्री प्रकाश कौर 'यूनीक होम' नाम का एक केंद्र चला रही हैं जहां वह परित्यक्त बच्चियों की देखभाल करती हैं। वह अपने

केन्द्र में पिछले 27 वर्षों से 1 महीने से लेकर 20 वर्ष की बच्चियों तक की देखभाल कर रही हैं। वह इन परित्यक्त बच्चियों को सुरक्षित जीवन मुहैया कराती हैं और उन्हें ऐसा माहौल देती हैं कि वे एक सम्मानित जीवन जी सकें।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान हमें आप सभी पुरस्कृत लोगों के जीवन और कहानियों के बारे में जानने का अवसर मिलेगा जो कि हम सबके लिए प्रेरणादायी और अनुकरणीय है। मैं राष्ट्र एवं समाज के लिए समर्पित इन महान विभूतियों को नमन करता हूँ।

मित्रो, जनता के प्रतिनिधि होने के नाते हम जनता और समाज की सेवा करते हैं। स्वच्छता, वनरोपण, महिला सशक्तीकरण, लैंगिक समानता आदि इन सभी विषयों पर संसद में चर्चा होती रहती है। हम सभा में ऐसे मामलों पर निरंतर चर्चा संवाद करते रहते हैं।

हमारी संसदीय समितियां समय समय पर इन मुद्दों की जांच करती रही हैं और इस संबंध में सिफारिशें भी करती रही हैं। संसद ने आवश्यकता के अनुरूप इन विषयों पर कानून भी बनाए हैं।

पद्म पुरस्कार पाने वाली इन विभूतियों की प्रस्तुतियों से हम सबको प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होगा। प्रस्तुतियों के दौरान माननीय संसद सदस्यों को पद्म पुरस्कार से सम्मानित इन प्रतिष्ठित लोगों के साथ जनता से जुड़े मुद्दों पर बातचीत करने का अवसर मिलेगा।

इन्हीं शब्दों के साथ, इस कार्यक्रम का शुभारंभ करता हूँ। मैं आशा करता हूं कि सभी माननीय सदस्य मेरी इस पहल का भरपूर लाभ उठाएंगे। मैं पद्म पुरस्कार से सम्मानित सभी विशिष्टजनों को एक बार फिर धन्यवाद देता हूँ। आप जनहित के कार्यों में लगे रहने के बावजूद समय निकालकर इस प्रस्तुतिकरण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए दूर-दराज के क्षेत्रों से यहां आएं हैं, इसके लिए आपको साधुवाद है।

मैं इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सभी माननीय संसद सदस्यों को भी धन्यवाद देता हूँ।

जय हिन्द।